

## व्याकरण पारिभाषिक शब्दावली

### गुण-

व्याकरणशास्त्र में गुण एक पारिभाषिक शब्द है और इसको बतलाने के लिए पाणिनि ने सूत्र लिखा है 'अदेङ् गुणः' अत् एङ् च गुणसंज्ञः स्यात् अर्थात् अत्= अ, ए, ओ को गुण कहा जाता है। और जहाँ कहीं आदुणः से गुण सन्धि होती है ये ही क्रम से हुआ करते हैं। जैसे- अ+ऋ के स्थान पर अर्, अ+इ= ए, अ+उ=ओ इत्यादि

### वृद्धि-

व्याकरण में 'वृद्धिरादैच्' आदैच्च वृद्धिसंज्ञः स्यात् अर्थात् आत् = आ, ऐ, औ को बृद्धि कहते हैं। वृद्धिरेचि से जहाँ वृद्धि संधि होती है वहाँ क्रम से ये तीनों होते हैं जैसे- अ+ऋ=आर्, अ+ए=ऐ, अ+ओ=औ इत्यादि।

### प्रगृह्ण-

'ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्' ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यसंज्ञं स्यात् अर्थात् ईकारान्त, ऊकारान्त, और एकारान्त द्विवचन शब्द की प्रगृह्ण संज्ञा होती है। जैसे हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू, यहाँ हरी, विष्णू और गङ्गे, की प्रगृह्ण संज्ञा होती है।

### प्रकृतिभाव-

प्रकृतिभाव से तात्पर्य है संधि का अभाव अर्थात् प्रकृति अपनी मूल रूप में ही जहाँ रह जाय, कोई विकृति न आये। 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' प्लुत और प्रगृह्य संज्ञा जिसकी होती है उसके बाद कोई अच अर्थात् स्वर आये हो वहाँ प्रकृतिभाव अर्थात् सन्ध्यभाव हो जाता है। जैसे हरी एतौ में हरी की प्रगृह्ण संज्ञा होकर प्लुतप्रगृह्या अचि० सूत्र से प्रकृतिभाव हो जाता है।

### पररूप-

'एङ्गि पररूपम्' अवर्णान्तादुपसर्गादेङ्गादौ धातौ परे पररूपमेकादेशः स्यात् पररूप अच्चसन्धि का एक प्रकार है अवर्णान्त उपसर्ग से एङ्गादि अर्थात् जिस धातु का पहला अक्षर ए, ओ हो

अगर ऐसे धातु बाद में आते हैं तो उपर्णान्त जो अवर्ण है वह पर अर्थात् बाद के ए, ओ का स्वरूप धारण कर लेगा। जैसे- प्र+एजते हैं यहाँ अवर्णान्त उपसर्ग प्र है उसके बाद एजते का ए है तो प्र का अकार ए का रूप ग्रहण कर लेगा इस प्रकार प्र हलन्त होने से ए से मिल जायेगा और प्रेजते यह रूप सिद्ध हो जायेगा।

### पूर्वरूप-

‘एङ्: पदान्तादति’ पदान्तादेडोऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात्। अर्थात् पदान्त एङ् = ए, ओ से परे = बाद में अत् = हस्त अ आये तो वह अकार पूर्व में आये हुए ए, ओ का रूप ग्रहण कर लेंगे इसे ही पूर्वरूप संधि कहा जाता है। जैसे होरेऽव, यहाँ हरे+अव है पदान्त में ए है उसके बाद हस्त अ है इसलिए अ ए का रूप ग्रहण कर लेगा और उसी में मिल जायेगा।

### पद-

सुसिङ्गन्तं पदम्। सुबन्तं तिङ्गन्तं च पदसंज्ञं स्यात्। अर्थात् सुप् प्रत्यय जिसके अन्त में हो ऐसे सुबन्त और तिङ् प्रत्यय जिसके अन्त में हो ऐसे तिङ्गन्त की पद संज्ञा होती है। सु औ जस् इत्यादि २१ सुप् प्रत्यय शब्दरूपों में लगते हैं इसलिए जितने शब्दरूप हैं वे सुबन्त कहलाते हैं और तिप्, तस्, झि इत्यादि १८ तिङ् प्रत्यय धातुरूपों में लगते हैं इसलिए वे सभी तिङ्गन्त कहलाते हैं। सुप् प्रत्यय लगे हुए को सुबन्त पद कहते हैं और तिङ् प्रत्यय लगे हुए को तिङ्गन्त पद कहते हैं।

क्रमशः.....